सत्य को अच्छी रीति समझें और आत्मानुभूति करें : दादी रत्न मोहिनी

(रपट : बी के गिरीश, ज्ञानसरोवर)

आबू पर्वत,ज्ञानसरोवर,१२ जुलाई २०१३। आज ज्ञानसरोवर के हार्मनी हॉल में ब्रह्माकुमारीज एवं आर ई आर एफ की भगिनी शाखा व्यापार एवं उद्योग सेवा प्रभाग के द्वारा व्यापार एवं उद्योग में सफलता के लिए आंतरिक शांति नामक विषय पर एक अखिल भारतीय सम्मेलन का उद्घाटन संपन्न हुआ। इस सम्मेलन में देश के करीब ६०० से अधिक व्यापारियों एवं उद्योगपतियों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन दीप प्रज्वलित करके संपन्न हुआ। मधुर वाणी के सदस्यों ने अतिथियों का स्वागत गीत के द्वारा किया।

ब्रह्माकुमारीज की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रत्न मोहिनी जी ने सम्मेलन में पधारे आत्माओं को अपना आर्शीवचन इन शब्दों में दिया। कहा कि आप सभी सर्वशक्तिमान परमात्मा की संतान हैं। परमात्मा के घर में मैं पुनः आप सभी का स्वागत कर रही हूँ। क्या आज की दुनियाँ को हम स्वर्ग कह सकते हैं? स्वर्ग की तुलना में यह नर्क के समान हो गया है। आज हम सभी को शुभ संकल्पों के दीप जगाने की जरूरत आन पड़ी है। परमात्मा हम सभी का कल्याणकारी पिता है। ऐसा हमें विश्वास है। हम उस सर्वोच्च पिता की ऊंची संतान हैं। क्या हम खुद खुद को प्यारे हैं? क्या हम सदा खुश हैं? जो दुख आने पर भी स्वयं को खुशी में रह सके वो ही आत्मा महान है। आध्यात्मिकता हमारे अंदर वैसी शक्ति पैदा करती है कि हम हर परिस्थिति में खुद को शांत और सुखी रह सकते हैं। ऐसे बल की प्राप्ति हमें राजयोग के अभ्यास से अर्थात परमपिता को याद करने से होती रहती है। सर्व शक्तियों के दाता परमात्मा से अपना अटूट संबंध बनाये रखने की विधि राजयोग है। इसके अभ्यास से सर्व प्राप्तियाँ करें।

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका एवं इस प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्रह्माकुमारी योगिनी बहन ने राजयोग की विशेषताओं का विस्तार से वर्णन किया। उन्होंने आये हुए अतिथियों को राजयोग का अभ्यास भी करवाया।

प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक एवं प्रख्यात उद्योगपति बी के एम एल शर्मा जी ने अपने आध्यात्मिक जीवन का अनुभव सुनाया। उन्होंने कहा कि मैं इस सस्थान से विगत ५० वर्षों से जुड़ा हुआ हूँ। मुझे सर्वोच्च सत्ता की प्रारंभ से ही खोज थी। कलकत्ते में ब्रह्माकुमारियों के कार्यक्रम में गया। कुछ नवीनता लगी। परमात्मा एवं आत्मा ग्राह्य परिचय प्राप्त हुआ। शुद्ध भोजन की बात काफी जंची। हर बात आत्मा को प्रभावित करती गई। ब्रह्मा बाबा से मिला। वे अद्भुत थे। वे बच्चों पर बलिहार जाते थे। एक सप्ताह उनके साथ रहने का अवसर मिला। बाबा ने करुणामय पिता के समान प्यार दिया। यह साधारण सिंपल ज्ञान है मगर प्राप्ति कितनी? स्वर्ग की। कुछ भी, बुराइयों के अलावा, छोड़ने की बात यहाँ नहीं है। मुझ जैसे व्यापारी को राजयोगी बना दिया। यह परमात्मा की ही कमाल है कि मुझ जैसे अनेक गृहस्थियों को इतना ऊंचा बना दिया। मेरा व्यापार भी काफी वृद्धि को प्राप्त होता गया। कोई तनाव नहीं है। मैं कभी भी तनाव की बात सोचता ही नहीं। आपका आध्यात्मिक व्यक्तित्व ही आपका व्यापार संभालता रहता है। प्रगति होती रहती है। कमाल है। लोग ही आपका सहयोग करते रहते हैं। हिम्मत रखकर चलेंगे तो अतीन्द्रिय सुख मिलता ही रहता है। खुशी, शांति एंव आनंद बनी ही रहती है। परमात्मा की आशीष मिलती रहती है। सफलता ही सफलता है।

फरीदकोट की ब्रह्माकुमारी प्रेम बहन ने कहा कि ईश्वर ने हमारे अंदर अनेक शक्तियाँ भरी हुई हैं। सिर्फ उनको उभारने की आवश्यकता है। आपने एक कहानी के माध्यम से बताया कि मनुष्य की संकल्प शक्ति सबसे बलशाली है। सकल्प शक्ति आत्मा का एक अंग है। परमात्मा ने हमें बतलाया है कि हम सभी देह नहीं आत्मा हैं। आत्मा एक प्रकाश है- छोटा सा सितारा। इसके अंदर हर शक्ति विद्यमान है। मात्र इसे महसूस करने की आवश्यकता है। आत्मा में सुख शांति एवं पवित्रता बहुतायत में है। इसे जगायें और महानता को प्राप्त करें।

मुंबई के मैनेजमेंट ट्रेंनर बी.के. गिरीश भाई ने कहा कि हम सभी यहाँ पर परिवर्तन करने के लिए आये हैं। उन्होंने पूछा कि क्या यह संभव है? अतिथियों ने परिवर्तन की बात स्वीकार की। कहा यह संभव है। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिकता का लक्ष्य भी यही है। परिवर्तन की प्रक्रिया क्या होगी, यह हम सभी यहाँ जानेंगे आने वाले तीन दिनों में। इसके साथ ही उन्होंने कुछ वीडियो क्लिप्स दिखलाये और पशुओं के अंदर करुणा की भावना को दर्शाया । कहा कि जानवर ऐसा कर सकते हैं तो मनुष्य क्यों नहीं ?

मुंबई के हरीश भाई ने प्रभाग की गतिविधियों के बारे में तथा सम्मेलन में होने वाले कार्यक्रमों की सूचना दी। मंच संचालिका ब्रह्माकुमारी गीता बहन ने संस्थान के बारे में बताया तथा अतिथियों का हार्दिक स्वागत भी किया।